International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

21 वीं सदी के हिंदी काव्य में स्त्री विमर्श

डॉ. आर. पी. भोसले

प्र.प्रधानाचार्य,

कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, पुसेगांव

Corresponding Author – डॉ. आर. पी. भोसले

DOI - 10.5281/zenodo.18654602

शोध सारांश:

21 वीं सदी के अंतिम दशक के साहित्यकार अरुण कमल, विष्णू खरे , मंगेश डबराल, चंद्रकांत देवताले, गोविंद माथुर,सुशीला टाकभौरे,राजेश जोशी,आलोक धन्वा आदि कवियों के साथ युवा पीढ़ी के ऐकात श्रीवास्तव,मदन कश्यप,नचिकेता, ओमप्रकाश जैसे कवियों ने भी स्त्री विमर्श संबंधी गहराई में उतरकर सोचना शुरू किया है। नये सिरे से उस पर चिंतन करके भारतीय समाज को आर-पार चीरते हुए ,उसे वर्तमान और भविष्य के संकटों से अवगत कराने का प्रयास किया है।

मूल शब्द – स्त्री,विमर्श,वर्तमान,काव्य आदि।

प्रस्तावना:

20 वीं सदी के अंतिम दशकों एवं 21 वीं सदी के प्रारंभ में स्त्रियों के प्रश्नों पर विश्वभर के साहित्यकारों एवं समाज चिंतको ने नये सिरे से विचार विमर्श करना प्रारंभ किया है। वर्त्तमान कवियों ने अत्यधिक प्रामाणिकता से नारी केंद्रित सवालों को उठाया है । जिनमें कुछ समस्याएँ मध्ययुग से लेकर आज तक नारी को दीमक की तरह चाट रही है, तो कई समस्याएँ बिल्कुल अधुनातन है, जो उसे अन्दर बाहर से तोड़ रही है। वर्तमान कविता इन सभी को उसके पत्तों-रेषों सहित प्रस्तुत करती है। उसमे स्त्री का सीता अहिल्यावाला रूप भी है और द्रौपदीवाला भी।

भूमंडलीकरण, सूचना विस्फोट और आर्थिक उदारीकरण की त्रिसूत्री याने कंपनी को मुनाफा और उसी मुनाफे के लिए स्त्री के देह का अनुपात विनिमय जैसा हो रहा है। मीडिया स्त्री के देह का मार्केट के लिए उपयोग कर रहा है। उसकी विज्ञापनी देह उसकी पहचान बन रही है। इस ओर गोविंद माथुर ने गहराई में उतरकर सोचने के लिए मजबूर किया है –

"वे आती है, अपनी चाल को आकर्षित करते हुए।
शरीर के उभारों को प्रदर्शित करती हुई, बहुत कम कपड़ों में
कपड़ों के प्रदर्शन के लिए।"1

नारी चाहे 'बेटी' हो या 'पत्नी' हो या 'माँ' हर रूप में उसका शोषण और दोहन, उसकी उपेक्षा एवं अवहेलना जारी है। इस सदी के कवियों ने इस पर गहराई में उतरकर सोचने के लिए मजबूर किया है। सामाजिक मानसिकता में आमूलाग्र परिवर्तन की मांग की है। साथ ही नारी के विद्रोह रूप का स्वागत भी किया है। स्त्री का अवांगर, दबंग रूप सामने आ रहा है। अब वह महज गुडिया स्त्री,, पुरुषों की अनुगामिनी बनकर नहीं रहेगी। 21 वीं सदी में अब वह पुरुषों के एकाधिकार और तानाशाही की जड़ों को ढीली

करने पर तुली है। उसे 'देवी' के रूप में नहीं बल्कि 'मानवी' के रूप में प्रतिष्ठा की चाहत है –

"दुर्गा के,काली के रूप धरे,
बने लक्ष्मीबाई भी। देती है चुनौती,
एकाधिकारवादी वर्चस्व को पुरुष के।''2

स्त्री का जीवन खतरे में है , इस ओर भी वर्तमान कवि संकेत करते हैं। दहेज़ समस्या किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है । इस समस्या ने अधिकतम समाज को डस लिया है। दहेज़ के लिए लड़की के परिवार का बड़ा शोषण और दोहन होता है । स्वयं लड़की तो इससे बुरी तरह आतंकित है। आज भी स्त्री की अग्नि परीक्षा ली जाती है। उसे पग-पग पर अपमानित, दण्डित किया जाता है। लेकिन इस देश में स्त्री विमर्श की दो परंपराएँ हैं। एक परंपरा सीता की है "जो किसी भी प्रकार के प्रश्न नहीं उठाती ।"3 बाल्यकाल से ही सुनी-सुनाई घटनाओं के कारण उसे दहशत-सी हो गई है । परिणामतः शक्तिस्वरूपा नारी शक्तिहीन, दीन-हीन और पुरुष के आगे प्रार्थनारत है । विष्णुचंद्र शर्मा की 'मंडी' में 'लड़की' कविता इसी ओर संकेत कराती है –

"कितना दहेज़ देंगे पापा। कितने माल मते के साथ।
होगी मेरी बिदाई। कितनी बातें छिपा लेगी सीने में।
फिर कब भाई। मेरी लाश की शनाख्त करेगा।"4

स्त्री-भ्रूण हत्या आज का ज्वलंत प्रश्न है। समय पर उस पर उपचार नहीं होगा तो, भविष्य में अनेक समस्याओं का निर्माण होगा। स्त्री का दमन उनके भ्रूण से ही प्रारंभ होता है। कानूनन के उस पर प्रतिबंध लगाये गए हैं, फिर भी स्त्री-भ्रूण हत्या एक चिंताजनक विषय के रूप में उभरकर सामने रहा है। इसने युवा पीढ़ी के कवियों को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया है । मृदुला जोशी की 'माँ मुझे आने दो' कविता इसी बात का जिक्र कराती है –

"कर सकती हूँ माँ। मै सबकुछ
जो रोशनी-सा चमकीला। रंगों से चटकीला हो।
पर आने तो दे। डर मत । माँ मुझे आने दो।"5

निष्कर्ष:

21 वीं सदी का हिंदी काव्य स्त्री विमर्श के विविध आयामों को उद्घाटित कर रहा है । स्त्री-भ्रूण हत्या चिंताजनक समस्या है। अगर ऐसी स्थिति रह जाये तो पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या दिनोंदिन घटती जाएगी। जवान बेटियों को दहेज़ के लिए जलाया जाता है। स्त्री के देह का अनुपात विनिमय जैसा हो रहा है। उसकी विज्ञापनी देह मार्केटिंग की वस्तु बनी है। वर्तमान हिंदी काव्य नारी के दबंग एवं विद्रोही रूप का स्वागत करता दिखाई देता है। अब आत्मनिर्भर नारी प्रार्थनारत बनकर पुरुष की परिक्रमा नहीं करेगी , बल्कि सुनामी लहरों से आंदोलन करेगी।

संदर्भ सूची:

1. गोविंद माथुर , 'मधुमती', मई 2002, पृ. 74
2. सं. रविंद्र कालिया , नया ज्ञानोदय,नवंबर ,2007, पृ.71
3. डॉ. सूर्यनारायण सुभे, 'आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास', पृ.266
4. सं. रविंद्र कालिया , नया ज्ञानोदय,जनवरी ,2008, पृ.25
5. सं.ब्रजेंद्र त्रिपाठी, समकालीन भारतीय साहित्य , अक्तूबर,2009,पृ.105